ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580|

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

अभिभावकों के साथ रहने वाले छात्र किशोर-किशोरियों के मूल्य

[1,2]Dr. Niketa Sharma

[1]M.A., Ph.D. , Home Science, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, Uttar Pradesh, India

[2]Lecturer-JDB College, SFS, Kota, Rajasthan, India

सार

हमारी आबादी का दो तिहाई हिस्सा किशोरों का है। यह विशेष आवश्यकता वाले लोगों का एक अनूठा समूह है। हमारे सर्वेक्षण का उद्देश्य लोगों के इस समूह में जीवनशैली और व्यवहार के पैटर्न की पहचान करना है और इसके बाद उन मुद्दों को सामने लाना है जिन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जीवनशैली संबंधी समस्याओं वाले अधिकांश किशोर 16-18 वर्ष के आयु वर्ग में हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक उदास थीं और उन्हें नींद की समस्या भी अधिक थी। मादक द्रव्यों के सेवन और अन्य व्यसनों को पुरुषों में अधिक दर्ज किया गया है। टेलीविज़न देखना या संगीत सुनना देर रात की सबसे आम गतिविधि (61.8%) बताई गई और इसलिए इसे हर दिन आठ घंटे से कम नींद के लिए सहायक कारक भी कहा गया। (58.9%) उत्तरदाताओं को प्रतिदिन आठ घंटे से कम नींद मिल रही है। अवसादग्रस्त महसूस करने वाले उत्तरदाताओं में से (41.5%) ने इसके लिए उपचार की मांग की। उनमें से बहुत से लोग मादक द्रव्यों के सेवन और अन्य व्यसनों में भी लिप्त थे। केवल (16.8%) उत्तरदाताओं की राय थी कि शारीरिक गतिविधि स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। सभी उत्तरदाताओं में से पैंतीस किशोर वर्तमान में सिगरेट पी रहे थे, जबकि 7% उत्तरदाताओं ने पान चबाया। धूम्रपान शुरू करने का सबसे आम कारण (37.1%) साथियों का दबाव था।

परिचय

किशोर जनसंख्या और किशोरों का स्वास्थ्य एक बहुत ही विशेष मुद्दा है और विभिन्न कारणों से विश्व स्तर पर इस पर ध्यान केंद्रित किया गया है। आज दुनिया हमारे इतिहास में 10-19 साल के बच्चों की सबसे बड़ी पीढ़ी का घर है और उनकी संख्या एक अरब से अधिक है और उनकी आबादी लगातार बढ़ रही है।

युवा लोगों की मांगें नई और अभूतपूर्व हैं; उनके माता-पिता उनके सामने आने वाले कई दबावों की भविष्यवाणी नहीं कर सकते थे। हम किशोरों को इन मांगों को पूरा करने में कैसे मदद करते हैं और उन्हें उस तरह की शिक्षा, कौशल और दृष्टिकोण से लैस करते हैं जिसकी उन्हें बदलते परिवेश में आवश्यकता होगी, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि हम उनकी दुनिया को कितनी अच्छी तरह समझते हैं।[1,2,3]

हमारी समझ को गहरा करने की दिशा में पहला कदम किशोरावस्था की अवधारणा को स्पष्ट करना है। ऐसा करने के लिए कोई सार्वभौमिक तरीका नहीं है, और पाकिस्तान में युवा लोगों को प्रभावित करने वाली नीतियां और कार्यक्रम निरंतरता की कमी से प्रभावित होने के लिए बाध्य हैं। "किशोरों" और उसके सजातीयों को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है। किशोर विशिष्ट स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं और आवश्यकताओं वाली एक अनोखी आबादी हैं। किशोरावस्था अवसाद और मनोविकृति जैसी गंभीर मानसिक बीमारियों की शुरुआत की चरम आयु है। शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और यौन परिवर्तन से तनाव का बोझ किशोरों को तनाव से भर देता है जिसके परिणामस्वरूप चिंता, वापसी, आक्रामकता, खराब मुकाबला कौशल और वास्तविक शारीरिक बीमारी हो सकती है।

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580|

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

किसी किशोर को समझाना कठिन है... लेकिन, किशोरी होना भी कठिन है, इसलिए, क्योंकि हमारे बच्चों को किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जिस पर वे भरोसा कर सकें, उनसे सलाह ले सकें और अपने जीवन के अच्छे, बुरे और डरावने अनुभवों को उनके साथ साझा कर सकें। उन्हें सुधारने पर ध्यान देने के बजाए हमें अपने बच्चों के जीवन में कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिए।

किशोरवस्था में होना कठिन होता है। यह एक ऐसा समय होता है जब वे अपने माता-पिता और शिक्षकों से अधिकतम सहयोग चाहते हैं। वे हमेशा यह नहीं बता पाते हैं, कि वे कैसा महसूस करते हैं और वे चीजों को अपने अंदर ही रखते हैं, जो उनके सीखने की क्षमता को प्रभावित करता है। माता-पिता और शिक्षकों को इस चुनौतीपूर्ण समय में उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।[7,8]

शुरूआती दिनों में ही उनसे बात करना महत्वपूर्ण है, चाहे आपका बच्चा अपने मन की बात बताता हो या नहीं, उनका हर समय ध्यान रखना चाहिए। आप के शुरुआती हस्तक्षेप से उन्हें अपनी कठिनाइयों को दूर करने और स्कूल में बच्चों के संघर्ष के दौरान सामने आने वाले मनोवैज्ञानिक मुद्दों से निपटने में मदद मिलेगी।

आइए हम किशोरावस्था के दिमाग को समझने और चुनौतियों का सामना करने में उनकी मदद करने वाले व्यवहार पर ध्यान दें।

- उनकीमदद करने से पहले खुद को अच्छे से तैयार करें:

यदि आपका बच्चा अकादमिक रूप से परेशानी का सामना कर रहा है, तो उनकी मदद करने के लिए आप फिर से एक छात्र बन जायें विश्वसनीय और भरोसेमंद संसाधनों के माध्यम से सीखने के लिए प्रतिबद्ध बनें।

संबंधित विषय में विशेषज्ञों के साथ व्यक्तिगत रूप से या ऑनलाइन प्रशिक्षण में भाग लें और विभिन्न प्रामाणिक दृष्टिकोण से पढ़ाई करेंआवश्यक संसाधनों और निर्देश के बिना कठिन विषयों को पढ़ाना आपके बच्चों की समझ के लिए नुकसानदायक हो सकता है। शिक्षक समान भावनात्मक और शैक्षणिक प्रशिक्षण के साथ इसे खत्म कर सकते हैं। माता-पिता और शिक्षकों को यह पता होना चाहिए कि छात्रों के अपरिहार्य सवालों के जवाब कैसे देना है।

- एकसहायक संस्कृति बनाएँ[9,01,11]

खुलेपन और समर्थन की संस्कृति बनाने में समय व्यतित करें, जहां बच्चे अपनी चिंताओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकते हैं। इसके अलावा, उन्हें सीखने और जीवन तत्वों के बीच संबंध विकसित करने और तलाशने में मदद करें। ऐसे में जब, प्रत्येक घटना अद्वितीय होती है, एक इंसान के रूप में हम जो अनुभवों और भावनाओं को साझा करते हैं, वे हमें सार्थक तरीकों से समय, भूगोल या संस्कृति की परवाह किए बिना दूसरों के अनुभवों से जुड़ने में मदद कर सकते हैं।

- उनकीचिंताओं को सुनें और समझें:

आपको अपने बच्चों के साथ सहानुभूति रखना सीखना चाहिए। उनकी कमियों या गलतियों पर चिडचिड़ाने के बजाय, आपको उनका मददगार बनना चाहिए। उन्हें सिखाएं कि कोई भी अपने आप में पूर्ण नहीं होता है और पूर्णता प्राप्त करने के बजाय, उन्हें प्रत्येक दिन एक बेहतर व्यक्ति बनने का प्रयास करना चाहिए।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | **Impact Factor: 7.580**|

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

- वास्तविकजीवन के अनुभवों पर प्रकाश डालें:

शिक्षकों और माता-
पिता को छात्रों को प्रेरित करने के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग करना चाहिए। उन लोगों के अनुभवों के बारे में बतायें, जिन्होंने अपने प्रयासों से एक खास मुकाम हासिल किया है, ताकि किशारों के प्रदर्शन को बेहतर किया जा सके। जब छात्रों के सामने कोई लक्ष्य होता है, तो वे अधिक मेहनत करते हैं।

बच्चों के लिए जिंदगी का सबसे बड़ा कोई तोहफा है तो वो हैं पैरेंट्स। क्योंकि माता-पिता हमेशा अपने बच्चों के पीछे खड़े रहते हैं। कुछ अच्छा होने पर खुशियां बांटते हैं तो मुश्किल आने पर दीवार की तरह अपने बच्चे के लिए खड़े रहते हैं। शायद इसलिए ही कहा जाता है कि किसी भी इंसान को उसके मां-बाप से ज्यादा कोई प्यार नहीं करता है। एक उम्र के बाद पैरेंट्स की बच्चों की जिंदगी में दखलअंदाजी सही नहीं होती है। पैरेंट्स के लिए बच्चे हमेशा छोटे ही रहते हैं इसलिए वो पहले की तरह ही उनकी जिंदगी में दखलअंदाजी करने लगते हैं। बच्चों को लगता है कि पैरेंट्स के साथ रहने पर उनकी आजादी खत्म हो जाती है। सोलह साल की उम्र के बाद या टीनएज होने पर बच्चे अपनी जिंदगी अपनी मर्जी से जीना चाहते हैं और ऐसे में पैरेंट्स की रोकटोक आजादी छीनने जैसी लगती है।[12,13]

अपनी आजादी की चाहत में कई बच्चे अपना घर छोड़कर दूसरे शहर में रहना शुरू कर देते हैं।

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंतकाल माना गया है। यह काल बारह से उन्नीस वर्ष तक रहता है, परंतु किसी किसी व्यक्ति में यह बाईस वर्ष तक चला जाता है। यह काल भी सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। भावों के विकास के साथ साथ बालक की कल्पना का विकास होता है। उसमें सभी प्रकार के सौंदर्य की रुचि उत्पन्न होती है और बालक इसी समय नए नए और ऊँचे ऊँचे आदर्शों को अपनाता है। बालक भविष्य में जो कुछ होता है, उसकी पूरी रूपरेखा उसकी किशोरावस्था में बन जाती है। जिस बालक ने धन कमाने का स्वप्न देखा, वह अपने जीवन में धन कमाने में लगता है। इसी प्रकार जिस बालक के मन में कविता और कला के प्रति लगन हो जाती है, वह इन्हीं में महानता प्राप्त करने की चेष्टा करता और इनमें सफलता प्राप्त करना ही वह जीवन की सफलता मानता है। जो बालक किशोरावस्था में समाज सुधारक और नेतागिरी के स्वप्न देखते हैं, वे आगे चलकर इन बातों में आगे बढ़ते है।[15,17,18]

पश्चिम में किशोर अवस्था का विशेष अध्ययन कई मनोवैज्ञानिकों ने किया है। किशोर अवस्था काम भावना के विकास की अवस्था है। कामवासना के कारण ही बालक अपने में नवशक्ति का अनुभव करता है। वह सौंदर्य का उपासक तथा महानता का पुजारी बनता है। उसी से उसे बहादुरी के काम करने की प्रेरणा मिलती है।

किशोर अवस्था शारीरिक परिपक्वता की अवस्था है। इस अवस्था में बच्चे की हड्डियों में दृढ़ता आती है; भूख काफी लगती है। कामुकता की अनुभूति बालक को 13 वर्ष से ही होने लगती है। इसका कारण उसके शरीर में स्थित ग्रंथियों का स्राव होता है। अतएव बहुत से किशोर बालक अनेक प्रकार की कामुक क्रियाएँ अनायास ही करने लगते हैं। जब पहले पहल बड़े लोगों को इसकी जानकारी होती है तो वे चौंक से जाते हैं। आधुनिक मनोविश्लेषण विज्ञान ने बालक की किशोर अवस्था की कामचेष्टा को स्वाभाविक बताकर, अभिभावकों के अकारण भय का निराकरण किया है। ये चेष्टाएँ बालक के शारीरिक विकास के सहज परिणाम हैं। किशोरावस्था की स्वार्थपरता कभी कभी प्रौढ़ अवस्था तक बनी रह जाती है। किशोरावस्था का विकास होते समय किशोर को अपने ही समान लिंग के बालक से विशेष प्रेम होता है। यह जब अधिक प्रबल होता है, तो समलिंगी कामक्रियाएँ भी होने लगती हैं। बालक की समलिंगी कामक्रियाएँ सामाजिक भावना के प्रतिकूल होती हैं, इसलिए वह आत्मग्लानि का अनुभव करता है। अत: वह समाज के सामने निर्भीक होकर नहीं आता। समलिंगी प्रेम के दमन के कारण मानसिक ग्रंथि मनुष्य में पैरानोइया नामक पागलपन उत्पन्न करती है। इस पागलपन में मनुष्य एक ओर अपने आपको अत्यंत महान व्यक्ति मानने लगता है और दूसरी ओर अपने ही साथियों को शत्रु रूप में देखने लगता है। ऐसी ग्रंथियाँ हिटलर और उसके साथियों में थीं, जिसके कारण वे दूसरे राष्ट्रों की उन्नति नहीं देख सकते थे। इसी के परिणामस्वरूप द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ा।[19,20,21]

किशोर बालक उपर्युक्त मन:स्थितियों को पार करके, विषमलिंगी प्रेम अपने में विकसित करता है और फिर प्रौढ़ अवस्था आने पर एक विषमलिंगी व्यक्ति को अपना प्रेमकेंद्र बना लेता है, जिसके साथ वह अपना जीवन व्यतीत करता है।

कामवासना के विकास के साथ साथ मनुष्य के भावों का विकास भी होता है। किशोर बालक के भावोद्वेग बहुत तीव्र होते हैं। वह अपने प्रेम अथवा श्रद्धा की वस्तु के लिए सभी कुछ त्याग करने को तैयार हो जाता है। इस काल में किशोर बालकों को कला और कविता में लगाना लाभप्रद होता है। ये काम बालक को समाजोपयोगी बनाते हैं।

किशोर बालक सदा असाधारण काम करना चाहता है। वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। जब तक वह इस कार्य में सफल होता है, अपने जीवन को सार्थक मानता है और जब इसमें वह असफल हो जाता है तो वह अपने जीवन को नीरस एवं अर्थहीन मानने लगता है। किशोर बालक के डींग मारने की प्रवृत्ति भी अत्यधिक होती है। वह सदा नए नए प्रयोग करना चाहता है। इसके लिए दूर दूर तक घूमने में उसकी बड़ी रुचि रहती है।[22,23,25]

किशोर बालक का बौद्धिक विकास पर्याप्त होता है। उसकी चिंतन शक्ति अच्छी होती है। इसके कारण उसे पर्याप्त बौद्धिक कार्य देना आवश्यक होता है। किशोर बालक में अभिनय करने, भाषणा देने तथा लेख लिखने की सहज रुचि होती है। अतएव कुशल शिक्षक इन साधनों द्वारा किशोर का बौद्धिक विकास करते हैं।

किशोर बालक की सामाजिक भावना प्रबल होती है। वह समाज में सम्मानित रहकर ही जीना चाहता है। वह अपने अभिभावकों से भी सम्मान की आशा करता है। उसके साथ 10, 12 वर्ष के बालकों जैसा व्यवहार करने से, उसमें द्वेष की मानसिक ग्रंथियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे उसकी शक्ति दुर्बल हो जाती है और अनेक प्रकार के मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

बालक का जीवन दो नियमों के अनुसार विकसित होता है, एक सहज परिपक्वता का नियम और दूसरा सीखने का नियम। बालक के समुचित विकास के लिए, हमें उसे जल्दी जल्दी कुछ भी न सिखाना चाहिए। सीखने का कार्य अच्छा तभी होता है जब वह सहज रूप से होता है। बालक जब सहज रूप से अपनी सभी मानसिक अवस्थाएँ पार करता है तभी वह स्वस्थ और योग्य नागरिक बनता है। कोई भी व्यक्ति न तो एकाएक बुद्धिमान होता है और न परोपकारी बनता है। उसकी बुद्धि अनुभव की वृद्धि के साथ विकसित होती है और उसमें परोपकार, दयालुता तथा बहादुरी के गुण धीरे धीरे ही आते हैं। उसकी इच्छाओं का विकास क्रमिक होता है। पहले उसकी न्यून कोटि की इच्छाएँ जाग्रत होती हैं और जब इनकी समुचित रूप से तृप्ति होती है तभी उच्च कोटि की इच्छाओं का आविर्भाव होता है। यह मानसिक परिपक्वता के नियम के अनुसार है। ऐसे ही व्यक्ति के चरित्र में स्थायी सद्गुणों का विकास होता है और ऐसा ही व्यक्ति अपने कार्यों से समाज को स्थायी लाभ पहुँचाता है।

विचार-विमर्श

किशोरों के जीवन में यौनिकता और रोमांस के अनुभवों में अक्सर उनके और उनके परिवार के लोगों के बीच मोलभाव शामिल होते हैं। मुझे अपने शोध के दौरान मिली जानकारी से यही पता चला है कि किशोरों में रोमांटिक प्रेम संबंधों को उनके माता-पिता अक्सर 'ध्यान भटकाने वाला' करार देते हैं जिससे पढाई पर 'बुरा असर' पड़ता है, जो 'जोखिम से भरा' है और एक ऐसा काम है 'जिसे नहीं किया जाना चाहिए'। प्रेम करने के बारे में सिर्फ़ पढाई ख़त्म हो जाने के बाद ही सोचना चाहिए। लेकिन यह सोच इस सत्य को मिटा नहीं सकती कि किशोर प्रेम सम्बन्ध बनाते हैं और यौन सम्बन्ध भी! प्रेम हो जाने पर परिवार से विद्रोह कर देने, भाग कर शादी कर लेने और 'परिवार की इज्जत' के लिए जान से मार दिए जाने का ख़तरा उठाने के अलावा वे और कौन से तरीके हैं जिनके द्वारा किशोर अपने परिवार के लोगों के साथ रोमांस और यौनिकता के विषय पर बातचीत (या निगोशिएट) कर सकते हैं और/या करते हैं.[25,27]

पोषण किशोरावस्था में एक महत्वपूर्ण आयाम है। कुपोषण की वजह से जहां एक ओर किशोर व किशोरियां शारीरिक रूप से कमजोर हो जाते हैं, वही मानसिक रूप से भी परेशान होते है। पढ़ाई में मन नहीं लगता है, चिड़चिड़ापन और थकावट हो जाती है। ऐसे में जरूरी है पोषण युक्त आहार लें। किशोरावस्था में सभी प्रकार के जरूरी प्रोटीन विटामिन युक्त आहार जरूरी है। खासकर किशोरियों के लिए संतुलित आहार बेहद जरूरी है। यह बातें राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य विभाग के युवा मैत्री केंद्र की ओर से हीरापुर में काउंसलर रानी प्रसाद ने कहीं। उन्होंने कहा कि ऐसे में अभिभावकों

की यह जम्मेवारी बनती है उनके खानपान पर विशेष ध्यान रखें। किशोरियों में माहवारी के समय आने वाली परेशानियां, स्वच्छता समेत अन्य जरूरी बातों को उन्होंने बताया। स्वच्छ और स्वच्छता पर विशेष रूप से जानकारी दी। मौके पर स्कूल की प्राचार्य कावेरी सरकार ने बताया कि समय-समय पर विभाग की ओर से किशोर किशोरियों को काउंसलिंग प्रदान की जा रही है। विभाग की ओर से यह एक अच्छी पहल है।[28,29,30]

परिणाम

किशोरावस्था जीवन का बहुत महत्तव मोड़ (Important turn) होता है । इस अवस्था में किशोर के अंदर शारीरिक विकास (Physical development) के साथ साथ मानसिक विकास (Mental development) तथा भावनाओं (Emotions) का आवेग चलता रहता है । इस आवेग को यदि सही दिशा न दिया गया तो समाज (Society) को हानि ही पहुंचाएगा । मानव जीवन (Human life) के निर्माण में इस अवस्था (किशोरावस्था) का बहुत महत्तव है । यदि इस अवस्था में लडके, लड़कियों (Boyes, Girls) को यदि सही दिशा मिल जाय तो उनका भविष्य उज्जवल (Future bright) हो सकता है । बचपना बीतते ही, समझदारी (Rationality) आने लगती है ।

बचपन में हुऐ घटनाओ (Events) (डाँटने, मारने) को आसानी से भुला देता है । जबकि किशोरावस्था इन घटनाओ को अधिक समय तक याद रखता है । इसी समय में ही किशोर, किशोरी जिन गुणों या दुर्गुणों (Qualities or Badges) को ग्रहण कर लेता है, उन्हें जल्दी नहीं छोड़ते है ।

किशोरावस्था में जिज्ञासा (Curiosity) बहुत तेज होती है इसी कारण से वे अच्छी – बुरी बातों की तरफ बहुत तेजी से आकर्षित (Attract) हो जाते हैं । इसी समय ही माता-पिता या अभिभावकों को किशोर के ऊपर दिशा एवं देख-रेख (Supervision) की बहुत महत्तव पूर्ण भूमिका (Role) होती है । किशोरावस्था (Adolescence) में भी उनके माता-पिता बच्चो जैसा व्यवहार करते हैं । जबकि इस समय अभिभावकों को उनके साथ अच्छे आचरण की कला, व्यवहार आदि सिखाने चाहिए ।[33,35]

यदि आरम्भ से ही बच्चो के अंदर अच्छे संस्कार (Good manners) भर दे तो वे आगे चलकर अच्छे नागरिक बनेंगे । किशोर या कोशोरियाँ की बुद्धि परिपक्क (Mature) नहीं होती, इसलिए अपने भले-बुरे के बारे में निर्णय लेना उनके लिए संभव (Possible) नहीं होता। यदि इस समय, उनको स्वयं के निर्णय पर छोङ दिया जाय तो वे पतन की तरफ बढ़ाने लगते हैं अर्थात वह अपने चरित्र को नष्ट करना शुरू कर देता है । (Starts destroying the character) ऐसी स्थिति में माता-पिता या अभिभावकों को मर-पीट, डांट करके नहीं, बल्कि प्रेम पूर्वक (Affectionately) उनको समझा के सही दिशा (Right direction) देनी चाहियें ।

परिवार (Family) का लड़ाई-झगड़ा और माता-पिता का गलत आचरण (Misprint), बच्चे के ऊपर प्रतिकूल प्रभाव (Adverse effect) पड़ता है, और उनके अंदर उदारता, सहयोग, सहनशीलता (Generosity, Cooperation, Tolerance) जैसे गुणों का हास्य होने लगता है । वही बच्चे आगे चल के उदंडित, कुसंस्कारी (Profane, mischievous) हो जाते हैं । इसलिए माता-पिता (mother-father) को उनके सर्वांगीण विकास (All round development) के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए ।[31,32]

शिक्षा का मनुष्य जीवन में, बड़ी भूमिका होती हैं । (Education has a big role in human life) यदि बच्चो को, उनके वाल्यावस्था से ही शिक्षा के प्रति रुचि जाग्रत (Interest awake) हो गयी तो ऐसे बच्चे जीवन क्षेत्र में हमेशा सफलता प्राप्त करते रहेंगे । शिक्षा के साथ – साथ बच्चों को, नैतिक शिक्षा (Moral education) पर भी ध्यान देने की जरूरत होती है । इसके अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा (religious education) का पाठ पढ़ाने की आवश्कता होती है, इससे उनके अंदर आत्मीयता , श्रमशीलता, उदारता, छमा, दया, त्याग, व्यवस्था (Intimacy , Laboriousness , Generosity , Shadow , Mercy , Sacrifice , the arrangement) , भगवान में विश्वास आदि जैसे सद्गुणों (Virtues) समावेश होना चाहिए । सामाजिक कार्यो के लिए भी बच्चों को प्रेरित (Induced) करना चाहिए ।

आज कल (Now-a-days) यह देखा गया है कि माता-पिता या अभिभावक बच्चों को काम नहीं देते कि इस काम को नहीं कर पाएंगे । जबकि इस अवस्था में उनके अंदर कुछ नई सीखने (New learning) कि बहुत इक्छा होती है । खाली समय में उनका मन इधर-उधर कि बातों या गलत संगति (Wrong association) में पड़ने लगता है और यही आज कल किशोर अपराधियों (Criminals)कि वृद्धि का एक कारण है। यदि उनसे सही समय पर सही कार्य नहीं कराया गया तो वे –

" खाली दिमाग शैतान का घर "

वाली उक्ति, उनके ऊपर हावी हो जाता है और वे अपराधिक श्रेणी में आ जाते हैं । इसलिए माता-पिता या अभिभावक को चाहिए कि बच्चों के इस निर्माण के लिए परिवार का वातावरण (Family atmosphere) सही बनाये रखें, जिससे उनके ऊपर गलत प्रभाव (Wrong effect) न पड़े और वे सही दिशा में अग्रसर रहें । (Keep moving in the right direction)

ऐसी स्थिति में माता-पिता या अभिभावकों को मार-पीट, डांट करके नहीं बल्कि प्रेम पूर्वक (Affectionately) उनको समझा के सही दिशा देनी चाहियें ।

अगर आपका बच्चा किशोर (Teenage) यानि कि टीनएजर है तो उसके व्यवहार में काफी बदलाव देखने को मिल सकते हैं। हो सकता है आपका बच्चा छोटी-छोटी बातों पर ज्यादा जल्दी रिएक्ट करता हो या कभी-कभी ज्यादा ही अग्रेसिव (गुस्सैल) हो जाता हो। माना कि क्रोध एक सामान्य व स्वस्थ भावना है, लेकिन फिर भी हर पेरेंट्स के लिए ये जानना महत्वपूर्ण है कि टीनएज के गुस्से से (Teenage Anger) कैसे निपटा जाए। हालांकि शायद ही कोई ऐसे पैरंट्स हों जो यह कहें कि उनके बच्चे को गुस्सा नहीं आता। यह एक बहुत स्वभाविक सा व्यवहार है जो कि असल में बच्चे के टीनेज होने के साथ-साथ पनपने लगता है। जैसे जैसे बच्चा बड़ा होता है वैसे वैसे बच्चे के मूड में और दिमाग में भी कई बदलाव होते हैं। जिस में से एक बच्चे का गुस्सा करना भी शामिल है। बस जरूरत है तो बच्चे में बढ़ रहे गुस्से को कंट्रोल (Teenage Anger) करने की। किशोरावस्था में बच्चे का गुस्सा कभी-कभी पैरेंट्स के लिए काफी मुश्किल भरा भी हो सकता है। जिसे लेकर वो काफी प्रेषण भी हो जाते हैं। फोर्टिस अस्पताल की साइकोलॉजिस्ट डॉ स्वाति मित्तल बता रही हैं बच्चे के गुस्से को शांत करने के कुछ जरूरी टिप्स जिनकी मदद से पैरंट्स अपने टीनएज बच्चे के गुस्से को कंट्रोल कर सकते हैं।

टीनएज में बच्चे क्यों रहते हैं गुस्से से भरे (Causes of Teens Anger)

उम्र के इस पड़ाव में आते आते टीनेजर्स के मन में कई ऐसे मुद्दे पनपने लगते हैं जिसका जवाब उन्हें नहीं मिल पाता या जब उनके मन की नहीं हो पाती। जिनको लेकर उनका गुस्सा बढ़ना लाजमी है। वे इस बात को समझ नहीं पाते कि किसी भी बात या मुद्दे को लेकर वो अपनी प्रतिक्रिया कैसे दें। शोध के मुताबिक किशोरावस्था में आते आते बच्चों पर स्कूल, होमवर्क, अन्य बहुत सी गतिविधियां, दोस्ती, सोशल मीडिया, आदि बातों का काफी दबाव हो सकता है। कहीं ना कहीं वे अधिक स्वतंत्रता चाहते हैं, चाहे वह उनके पढ़ाई से संबंधित विषय पर ही क्यों न हो। इसी वजह से उनकी प्रतिक्रियाएं कभी-कभी आक्रामक हो जाती हैं और उन्हें गुस्सा आने लगता है। इन निम्न जरूरी टिप्स की मदद से आप बच्चे के गुस्से को कंट्रोल (Anger control) कर सकते हैं।

ऊंची आवाज में न करें बच्चे से बात (Speak Slowly)

आमतौर पर पैरेंट्स बच्चों से चिल्लाकर बात करते हैं। जब आप अपने टीनएजर्स बच्चे से चिल्ला कर बात करते हैं तो वह भी अपनी आवाज बुलंद करके उसी लहजे में आपको जवाब देता है। जिस वजह से उसके अंदर का गुस्सा धीरे-धीरे बढ़ने लगता है। ऐसे में आप चिल्लाने की बजाय अपने बच्चे से धीमी आवाज और प्यार से बात करें। जिससे वह अपनी भावनाएं सकारात्मक रख सके और अपना गुस्सा कंट्रोल कर सके। लेकिन यदि आपको लगता है कि बच्चा जरूरत से ज्यादा कंट्रोल खो देता है, अत्याधिक क्रोध में चिल्लाने लगता है, तो यह उसके मानसिक स्वास्थ्य की वजह से भी हो सकता है। यदि बच्चा गुस्से में अपने आप को नुकसान पहुंचा रहा है या उसके व्यवहार से डिप्रेशन झलकता है या फिर उसके व्यवहार में कुछ और बदलाव महसूस हो रहा है तब एक्सपर्ट की सलाह लें।

गुस्सा शांत होने दें (Walk Away)

ऐसी कई चीजें हैं जिसे आपका बच्चा नापसंद कर सकता है। ऐसे में आप अपने बच्चे से वो बातें करने से बचें। बार-बार बच्चे से उस बात को लेकर बहस ना करें। यदि आपको लगता है कि आपका भी क्रोध बढ़ रहा है तो कुछ देर के लिए वहां से चले जाएं। ताकि आपस में कहासुनी ना बढ़े। कुछ देर में बच्चे का और आपका दोनों का ही गुस्सा शांत हो जाएगा। गुस्सा शांत होने के बाद बात करें।[32]

निष्कर्ष

किशोरावस्था में परिवार की भूमिका क्या होनी चाहिए? किशोरावस्था की समस्या के समाधान के 5 उपाय जानिए सद्गुरु से। आप अगर सिर्फ पांच बातों का ख्याल रखें तो यह अवस्था न केवल आपके बच्चे के लिए बल्कि आपके लिए भी एक सुखद अहसास बन सकती है।

क्या किशोरावस्था समस्या है
आपके जीवन में तमाम तरह की परिस्थितियां आती हैं। ध्यान रखें कि वो सिर्फ परिस्थितियां ही होती हैं। अब इनमें से कुछ को आप संभाल पाते हैं और कुछ को संभाल नहीं पाते। जिस स्थिति को आप संभाल नहीं पाते, उसे आप एक समस्या मानने लगते हैं, बजाय इसके कि आप उसे सिर्फ एक स्थिति के तौर पर देखते और उसे संभालने के लिए खुद को तैयार करने की कोशिश करते। तो कैसे करें खुद को तैयार? अगर आप भी एक किशोर बच्चे के माता या पिता हैं या आपका बच्चा किशोरावस्था की तरफ बढ़ रहा है तो आप सिर्फ पांच बातों का ख्याल रखें, यह अवस्था न केवल आपके बच्चे के लिए बल्कि आपके लिए भी सुखद अहसास बन सकती है।

1- उनके अच्छे दोस्त बनें
अगर आप एक किशोर की नजर से जिदंगी को देखें तो उनके भीतर जिंदगी रोज बदल रही है। चूंकि किशोर बहुते तेजी से बढ़ रहे हैं, इसलिए उनके आसपास के लोग उस वृद्धि को समझ पाने में सक्षम नहीं होते। आमतौर पर दादा-दादी या नाना-नानी इन बच्चों के प्रति ज्यादा लगाव और प्रेम रखते हैं। इसकी वजह है कि वे चीजों को एक थोड़ी दूरी के साथ देख रहे होते हैं। किशोरावस्था में आप धीरे-धीरे अपने हॉरमोन के वश में आ जाते हैं। जबकि बुढ़ापे का मतलब है कि आप हारमोन्स के नियंत्रण से बाहर निकलने लगते हैं। इसलिए बुजुर्ग लोग किशोरों की मानसिकता को थोड़ा समझ पाते हैं। लेकिन जो मध्य आयु के होते हैं, उनलोगों को किशोरों की मानसिकता के बारे में अधिक जानकारी नहीं होती। अगर ऐतिहासिक दृष्टि से भी देखा जाए तो मध्य आयु हमेशा से एक भ्रमित मानसिकता का शिकार रही है।

किशोरावस्था के कई पहलू होते हैं। पहली चीज, उनकी प्रतिभा या बुद्धि हारमोनों द्वारा संचालित होने लगती है। अचानक उनको पूरी दुनिया काफ़ी अलग सी नजर आने लगती है। अभी तक उनके आसपास जो लोग होते हैं, वो अचानक उनको स्त्री और पुरुष के रूप में नजर आने लगते हैं, यानी लिंग-भेद के प्रति वो अधिक सचेत हो उठते हैं। और इस वजह से इंसान की सिर्फ आधी आबादी में उनका रुझान होने लगता है। यह अपने आप में एक बड़ा बदलाव है। माता-पिता को यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि किशोरों के लिए यह स्थिति नई है और वो उससे तालमेल बैठाने की कोशिश कर रहे हैं।
अगर आप उनके अच्छे दोस्त हैं और उनको कोई समस्या आती है तो वे इसके बारे में आपसे बात करेंगे। लेकिन अधिकतर माता-पिता अपने बच्चों के बहुत खराब दोस्त होते हैं, इसलिए वे बेचारे अपने लिए दूसरे दोस्त बनाते हैं। चूंकि उनके दोस्त भी उसी अवस्था और मानसिकता से गुजर रहे होते हैं, इसलिए वे उनको बेतुकी सलाह ही देते हैं। बेहतर स्थिति तो यह है कि अगर उन्हें कोई समस्या है तो वो आपके पास आएं, लेकिन अगर आप खुद को बॉस समझते हैं तो वे आपके पास नहीं आएंगे। अगर आपको लगता है कि उनके जीवन पर आपका मालिकाना हक है,या अगर आप एक भयंकर माता-पिता हैं तो वे आपके पास नहीं आएंगे।

अगर आप उनके अच्छे मित्र हैं तो वे आपके पास जरूर आएंगे, क्योंकि जब भी उन्हें कोई समस्या होगी तो वे स्वाभाविक रूप से एक दोस्त को तलाशेंगे। इसलिए आपकी पूरी कोशिश होनी चाहिए कि कम उम्र से ही आप उनके सबसे अच्छे दोस्त बनें, और कम से कम तब तक बने रहें जब तक वो 18 से 20 साल के न हो जाएं। दोस्ती का यह भरोसा आपको अर्जित करना होगा। यह महज इसलिए नहीं होगा, क्योंकि आपने उन्हें पैदा किया है। उन्हें पैदा करने के चलते आपको माता-पिता की उपाधि तो मिल गई है, लेकिन दोस्त की नहीं। इस चीज को हासिल करने के लिए आपको रोज जिम्मेदारी भरा व्यवहार करना होगा।[35,33]

2- उन्हें जिम्मेदार बनाएं

आप अपने किशोरों के साथ निबटने की कोशिश न करें, बल्कि खुद को उनके लिए हमेशा उपलब्ध रखें। उन्हें हर चीज या काम के लिए जिम्मेदार बनाएं। कभी इतनी हिम्मत दिखाएं कि कम से कम एक महीने अपनी पूरी तनख्वाह उन्हें सौंप दें और उन्हें घर चलाने की जिम्मेदारी दे दें। आपको बड़े पैमाने पर बदलाव दिखेगा। अगर आप वाकई अपने बच्चे के साथ कुछ करना चाहते हैं तो आपको उन्हें अपने विस्तार का मौका देना चाहिए, क्योंकि यही तो वो भी करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि इस समय सिर्फ उनका शरीर ही बढ़ रहा है, बल्कि बतौर इंसान उनकी क्षमता भी बढ़ रही है। इसलिए उनके उस विस्तार को रोकने की बजाय आपकी कोशिश उस विस्तार को बढ़ावा देने की होनी चाहिए।

अगर आप इस विस्तार को रोकने की कोशिश करेंगे तो आपको बहुत ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ेगा। अगर आपको बेटा है तो आपकी समस्या एक तरह की होगी, लेकिन अगर आपकी बेटी है तो आपको दूसरी तरह की समस्या का सामना करना पड़ेगा। यह कभी मत सोचिए कि बच्चों को रोकना या काबू करना उनके जीवन को नियंत्रित करने का उचित तरीका है। जिम्मेदारी उन्हें रास्ते पर रखेगी। जैसा कि मैंने आपसे कहा कि आप एक महीना अपना पैसा उन्हें दें और उनसे कहें कि आप छुट्टी पर हैं और उन्हें घर चलाना है। अगर आपको डर है कि वह इस पैसे को बाहर जाकर कहीं उड़ा देंगे, तो चिंता मत कीजिए, जो दिक्कत आपको आएगी वही दिक्कत उनको भी आएगी। उन्हें भी कम से कम एक महीने के लिए इस हालात से गुजरने दीजिए। बेशक, आप अपने पास कुछ अलग से पैसा रख सकते हैं, लेकिन उन्हें भी अहसास होने दीजिए कि अगर आज उन्होंने सारा पैसा उड़ा दिया तो कल सुबह नाश्ता भी नहीं मिल पाएगा। इसलिए सडक़ पर या बाहर निकल कर बच्चे को हकीकत का अहसास कराने और सिखाने से बेहतर होगा कि उन्हें इसका अहसास घर के भीतर एक सुरक्षित माहौल में कराया जाए।

3- उनके असहायपन को बढ़ा चढ़ाकर न पेश करें

आपके बच्चे बड़े हो कर किशोर हो रहे हैं। यह मौका खुशी का है। लेकिन आप उनके बढऩे से परेशान हैं। दुर्भाग्य से हम शैशवास्था और बचपन का स्तुतिगान करते है, जबकि हकीकत में वो जीवन की असहाय अवस्थाएं हैं। जब बच्चे छोटे होते है, तो वो असहाय होते हैं और हर चीज के लिए आपकी तरफ देखते हैं। आपको बच्चे चमत्कारिक नजर आते हैं, क्योंकि वे असहाय होते हैं। मान लीजिए कोई बच्चा आपके सामने आकर आपसे कहे कि आप कौन होते है मुझे कुछ कहने वाले, तो हो सकता है कि आपको वह बच्चा अच्छा न लगे। लेकिन बच्चे यह सवाल करने में 14-15 साल लगा देते हैं।

बचपन जीवन का एक असहाय दौर होता है, जहां आप किसी दूसरे की मदद और सहयोग के बिना रह ही नहीं सकते। अगर आप बचपन का गुणगान करते रहेंगे तो आप जीवन भर असहाय बने रहेंगे। चूंकि लोग बच्चों के बचपन के इतने आदी हो चुके होते हैं कि जब यही बच्चे किशोरावस्था में पहुंचकर अपने पैर पर खड़े होना शुरू करते हैं तो उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगती।

अगर आप उस खिल रहे और ताजगी से भरे जीवन के लिए कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति बनना चाहते हैं तो आपको अपनी सीमा नहीं तय करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो हर वक्त अपने व्यक्तित्व की अहमियत का अहसास नहीं कराना चाहिए। जब बच्चा शिशु था और वह घुटनों के बल चलता था तो आप भी उसके साथ घुटने के बल चलते थे। अब वही बच्चा अगर किशोर बनकर झूलना चाहता है तो आपको भी उसके साथ झूलने के लिए तैयार रहना चाहिए। लेकिन अब भी अगर आप उसके साथ घुटने के बल चलना चाहेंगे तो उसकी इसमें कोई रुचि नहीं होगी। जवानी और जोश से भरे हुए किशोरों को वैसे माता-पिता हास्यास्पद नजर आते हैं जो अब भी उनके साथ घुटने के बल चलने की इच्छा रखते हैं।

4- उन पर अधिकार मत जताइए, उन्हें शामिल कीजिए

सबसे पहले तो इस विचार को छोड़ दीजिए कि बच्चे के जीवन पर आपका अधिकार है। अगर आप ऐसा सोचते हैं तो किशोरावस्था में आने के बाद वे आपको अपने तरीके से बताएंगे कि उनके जीवन पर आपका हक नहीं है। ये किशोर सिर्फ आपको इतना ही बताने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन आप इनकी इस बात को हजम करने के लिए तैयार नहीं हैं। किसी दूसरे के जीवन पर आपका कोई हक नहीं है। अगर कोई दूसरा जीवन आपके साथ रहने का फैसला करता है तो खुशी मनाइए, यह अपने आप में एक शानदार चीज है। फिर चाहे वो आपके पति हों, पत्नी हो या बच्चे। इसकी अहमियत समझिए कि उन्होंने जीवन में आने के लिए आपको जरिए के रूप में चुना या जीवन जीने के लिए आपके साथ आने का फैसला किया। इसलिए आप किसी भी तरह से उन पर अधिकार नहीं जमा सकते। अगर आप अभी यह बात नहीं समझे तो आपको यह बात तब समझ में आएगी, जब आप मरेंगे या जब वे मरेंगे। आपका उन पर मालिकाना हक नहीं है, लेकिन बेशक आपको उन्हें अपनी जिंदगी में साथ लेकर और शामिल करके चलना चाहिए।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal) | Impact Factor: 7.580|

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

5- अपने लिए कुछ कीजिए

अगर हम वाकई अपने बच्चों का बेहतर पालन पोषण करना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें यह देखना चाहिए कि हम अपने लिए क्या कर सकते हैं। जो लोग अभी माता-पिता बनना चाहते हैं या बनने वाले हैं, उन्हें एक छोटा सा प्रयोग करना चाहिए। उन्हें आराम से बैठ कर आत्मविश्लेषण करना चाहिए कि क्या चीज उनकी जीवन में ठीक नहीं है और क्या उनके जीवन के लिए बेहतर होगा। इसमें उन चीजों पर गौर नहीं करना चाहिए, जो बाहरी दुनिया से संबंधित है, क्योंकि इसमें उन्हें बाहरी लोगों का सहयोग लेना पड़ेगा। उन्हें सिर्फ अपने से जुड़े पहलुओं पर गौर करना चाहिए। उन्हें देखना चाहिए कि क्या अगले तीन महीने में वे अपने में बदलाव ला पाते हैं।

अगले तीन महीने के भीतर अपनी किसी चीज पर मसलन - अपने व्यवहार, बोली, काम करने के तरीके या आदतों में आप सुधार ला पाते हैं तो आप अपने बेटे या बेटी को विवेकपूर्ण तरीके से संभालने के लिए तैयार हैं। अगर ऐसा नहीं है तो आपको दूसरों की सलाह और सुझाव से बच्चे पालने होंगे। हालांकि इस मामले में सलाह जैसी कोई चीज नहीं होती। इसमें हरेक बच्चे का अच्छी तरह से निरीक्षण और परख करके देखना होता है कि उस बच्चे के साथ क्या किया जा सकता है और क्या नहीं। आप एक जैसी चीज हर बच्चे के साथ नहीं कर सकते, क्योंकि हर बच्चे में एक अलग जीवन, एक अलग तरीके से घटित हो रहा है।[35]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Kail RE (2006). Children and Their Development (4 सं°). Prentice Hall. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-0131949119.
2. ↑ ब्रोनफेनब्रेनर, यू (1979). दी इकोलॉजी ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट: एक्सपेरिमेंट्स बाय नेचर एंड डिजाइन . केम्ब्रिज, एमए: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. (आईएसबीएन 0-674-22457-4)
3. ↑ Smith PK, Cowie H and Blades M, Understanding Children's Development, Basic psychology (4 संस्करण), Oxford, England: Blackwell
4. ↑ Mind in Society: The development of higher psychological processes (Translation by Michael Cole). Cambridge, MA: Harvard University Press. 1978 (Published originally in Russian in 1930).
5. ↑ Thought and Language. Cambridge, MA: MIT Press. 1962.
6. ↑ Cultural, Communication, and Cognition: Vygotskian Perspectives. Cambridge University Press. 1985.
7. ↑ वाटसन, जे.बी. (1926). वॉट दी नर्सरी हैज टू से अबाउट इन्स्टिंगक्ट. इन सी. मार्किसन (एड्स.) साइकोलॉजी ऑफ 1925. वोर्चेस्टर, एमए: क्लार्क विश्वविद्यालय प्रेस.
8. ↑ व्हाइट, एस.एच. (1968). दी लर्निंग मैच्योरेशन कंट्रोवर्सी: हॉल टू हल. मेरिल-पाल्मर क्वार्टर्ली, 14, 187-196.
9. ↑ Lemma A (2007), "Psychodynamic Therapy: The Freudian Approach", प्रकाशित Dryden W (संपा°), Handbook of Individual Therapy (5 संस्करण), Sage publications
10. ↑ एस्लिन, आर. (1993). "कमेंट्री: दी स्ट्रेंज एट्रेक्टिवनेस ऑफ डायनामिक सिस्टम्स टू डेवलपमेंट." इन एल. स्मिथ, ई. थेलेन (एड्स.), ए डायनामिक सिस्टम्स एप्रोच: एप्लीकेशंस. केम्ब्रिज, एमए: एमआईटी प्रेस.
11. ↑ समेरोफ़, ए. (1983). "फेक्टर्स इन प्रीडिक्टिंग सक्सेसफुल पैरेंटिंग." इन सास्सेरथ, वी. (एड.), मिनमाइजिंग हाई-रिस्क पैरेंटिंग. स्किलमन, एनजे: जॉनसन एंड जॉनसन.
12. ↑ बेर्क, लौरा ई. (2009). चाईल्ड डेवलपमेंट . 8th एड. संयुक्त राज्य अमेरिका: पियर्सन एजुकेशन, इंक.
13. ↑ Patterson C (2008), Child Development, New york: McGraw-Hill
14. ↑ Erikson E (1968). Identity, Youth, and Crisis. New York: Norton.
15. ↑ Mercer J (1998). Infant Development: A Multidisciplinary Introduction. Pacific Grove, CA: Brooks/Cole.
16. ↑ Buchwald J (1987), "A comparison of plasticity in sensory and cognitive processing systems", प्रकाशित Gunzenhauser N (संपा°), Infant Stimulation, Skillman NJ: Johnson & Johnson
17. ↑ Greenough W, Black J and Wallace C (1993), "Experience and brain development", प्रकाशित Johnson M (संपा°), Brain Development and Cognition, Oxford: Blackwell, पपृ° 319–322
18. ↑ Berk L (2005). Infants, Children, and Adolescents. Boston: Allyn & Bacons.

19. ↑ Waters E, Kondo-Ikemura K, Posada G and Richters J (1991), "Learning to Love: Mechanisms and Milestones", प्रकाशित Gunnar M and Sroufe L (संपा°), Minnesota Symposia on Child psychology, 23, Self-Processes and Development, Hillsdale, NJ: Erlbaum, पपृ° 217–255
20. ↑ मसूर एफई. (1995). इन्फेन्ट्स' अर्ली वर्बल इमिटेशन एंड देयर लेटर लेक्सिकल डेवलपमेंट. मेरिल-पाल्मर क्वाटर्ली, 41, 286-306.OCLC 89395784
21. ↑ गथेर्कोले एसई. (2006).[1] Archived 2011-06-05 at the Wayback Machineनॉन वर्ड रिपिटीशन एंड वर्ड लर्निंग: दी नेचुरल ऑफ दी रिलेशनशिप. Archived 2011-06-05 at the Wayback Machine एप्लाइड साइकोलिंग्विस्टिक्स 27: 513-543.doi:10.1017.S0142716406060383
22. ↑ Stern DN (1990), Diary of a Baby, Harmondsworth: Penguin
23. ↑ Ingram D (1999), "Phonological acquisition", प्रकाशित Barrett M (संपा°), The Development of Language, London: Psychology Press, पपृ° 73–97
24. ↑ Bruner JS and Lucariello J, "Monologue as narrative recreation of the world", प्रकाशित Nelson K (संपा°), Narratives from the Crib, Cambridge MA: Harvard University press
25. ↑ Bruner JS (1990). Acts of Meaning. Cambridge MA: Harvard University Press.
26. ↑ Pan B and Snow C (1999), "The development of conversational and discourse skills", प्रकाशित Barrett M (संपा°), The Development of Language, London: Psychology Press, पपृ° 229–50
27. ↑ Gleitman LR (1990), "The structural sources of verb meaning", Language Acquisition, 1: 3–55, डीओआइ:10.1207/s15327817la0101_2.
28. ↑ Barrett MD, Harris M and Chasan J (1991), "Early lexical development and maternal speech: a comparison of children's initial and subsequent uses of words", Journal of Child Language, 18 (1): 21–40, PMID 2010501, डीओआइ:10.1017/S0305000900013271.
29. ↑ Hart B and Risley T (1995). Meaningful differences in the everyday experience of young American children. Baltimore: P.H. Brookes.
30. ↑ Moerk E (1996). "Input and learning processes in first language acquisition". Advances in Child Development and Behavior. 26: 181–229. डीओआइ:10.1016/S0065-2407(08)60509-1.
31. ↑ Moerk EL (1986), "Environmental factors in early language acquisition", प्रकाशित Whitehurst GJ (संपा°), Annals of child development, 3, Greenwich: CTJAI press
32. ↑ Moerk EL (1989). "The LAD was a lady and the tasks were ill defined". Developmental Review. 9: 21–57. डीओआइ:10.1016/0273-2297(89)90022-1.
33. ↑ Pinker S (1994). The Language Instinct. London: Allen Lane.
34. ↑ Kegl J, Senghas A and Coppola M (1999), "Creation through construct: Sign language emergence and sign language change in Nicaragua", प्रकाशित DeGrafs M (संपा°), Language Creation and Language Change: Creolization, Diachrony and Development, Cambridge, MA: MIT Press
35. ↑ Morford JP and Kegl J (2000), "Gestural precursors to linguistic constructs: how input shapes the form of language", प्रकाशित McNeill D (संपा°), Language and Gesture, Cambridge: Cambridge University Press